2 मई 2016

विश्व सूफी सम्मेलन: भारत का वैश्विक समुदाय तक पहुँच

*डॉ अतहर ज़फर और डॉ ओमैर अनास **

विश्व सूफी सम्मेलन 17-20 मार्च 2016 से नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। यह सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को शांति, सहिष्णुता और सामंजस्यपूर्ण सह- अस्तित्व का संदेश देने में सफल रहा, जब दुनिया में एक बार फिर हिंसा बढ़ रही है। सम्मेलन को सरकार और सार्वजनिक संस्थानों से प्रोत्साहन मिला था क्योंकि इस सम्मेलन का विषय भारत की ओर से शांति और सद्भाव का संदेश भेजना था।[1] भारत का प्रथम विश्व सूफी सम्मेलन[2] एक गैर-राजनीतिक संस्था के रूप में कार्य करते सूफियों के एक समूह अखिल भारतीय उलमा और मशाइख बोर्ड (एआईयूएमबी) द्वारा आयोजित किया गया था। इस समूह का उद्देश्य मस्जिदों और सूफी दरगाहों के माध्यम से विश्व स्तर पर सूफी संस्कृति का प्रचार करना है। यह ध्यान दिया जाए कि दिल्ली में ये सम्मेलन आयोजित होने से पहले कई किस्मों के सम्मेलन संचालित हुए थे। एआईयूएमबी ने 10 मई 2010 को भागलपुर, बिहार; 3 जनवरी 2011 को मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में सुन्नी सम्मेलन सहित इस विषय पर कई सम्मेलन और जनसभाएँ तथा 16 अक्टूबर 2011 को मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में एक मुस्लिम महापंचायत, और 26 नवंबर 2011 को बरेली में मशाइख-ए-तरीकत सम्मेलन आयोजित की थीं। इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में सूफियों, विद्वानों और शिक्षाविदों ने भाग लिया था; हालांकि, सूफियों के कुछ वर्गों के लोग परंपराओं और सत्ता के बीच दूरी बनाए रखने का हवाला देते हुए इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए।

विश्व न केवल व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर चरमपंथ, आतंकवाद और हिंसा से पीड़ित रहा है, बल्कि कई राज्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध भी छेड़ दिया है, जिससे पूरे विश्व में असंतोष और नाराज़गी फैल गई है। अमेरिका में 9/11 का हमला, अफ़गानिस्तान, इराक और लीबिया के युद्ध, 'नार्वे के सामूहिक हत्यारे एंडर्स ब्रेविक' का हत्या करने का जुनून,[3] और अमेरिकी शिक्षण संस्थानों के कैम्पस में थम-थम कर हुई गोलीबारी कुछ समूहों,

राज्यों और व्यक्तियों द्वारा किए गए हिंसक कृत्यों के उदाहरण हैं। विश्व अब एक खतरनाक आतंकी समूह इस्लामिक स्टेट ऑफ सीरिया एंड इराक (आईएसआईएस) से जूझ रहा है। धर्म आधारित अतिवाद और आतंकवाद दुनिया पर हावी हो रही है। इस बात की चिंता है कि विशेषकर पश्चिम एशिया में धार्मिक सन्दर्भों में लोगों का एक-जुट होना सदियों पुरानी सामाजिक और आर्थिक संरचना को नष्ट कर सकता है, इसके अलावा इस क्षेत्र की प्रावस्था और भौतिक संरचनाओं को बदल सकता है। लंबे समय तक कायम सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक शांति, सुकून, स्थिरता की संभावना इस मोड़ पर बहुत दूर लगने लगी है। लोग इसका उत्तर खोजने और सुकून तलाशने के लिए अब आध्यात्मिकता की ओर बढ़ रहे हैं।

इसलिए, अब दुनिया आध्यात्मिक संतोष के लिए पूर्व की ओर बढ़ रही है और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जलालुद्दीन रूमी, एक फारसी कवि और सूफी शेख, जो लगभग 800 साल पहले 13 वीं शताब्दी में पैदा हुए थे, अमेरिका के 'सबसे लोकप्रिय कवि' बन गए हैं।[4] 13-14 वीं शताब्दी में सूफीवाद लोकप्रिय हो गया जब दुनिया मंगोल हमले का सामना कर रही थी। दुनिया को दुबारा से राज्य और आरोपित गैर-राज्य अभिकर्ताओं के रूप में हिंसक खतरों का सामना करना पड़ा और सूफीवाद लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। रूमी की कविता *मथनावी*, दुनिया भर में लाखों में बिक रही है।[5] भारत विभिन्न परंपराओं के सूफियों की मंडलियों के जमघट का स्थान रहा है जो एक साथ आते और अपने विचारों का प्रचार-प्रसार करते हैं। दिल्ली को स्वयं ही '22 ख्वाजाओं की चौखट' कहा जाता है, जिसमें ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी भी शामिल हैं , जो अजमेर के ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य और अध्यात्मिक उत्तराधिकार थे ।[6] सूफीवाद पर सबसे पहले लिखी गई और सबसे अधिक जाना-माना किताब है काशफ-उल-महजोब और इसे भारतीय उपमहाद्वीप में अली हुजविरी ने लिखा था, जिन्हें आम तौर पर हज़रत दाता गंज बख्श के नाम से जाना जाता था।

भारत पूर्व से आने वाला एक प्रमुख प्रकाश रहा है और इसने सहस्राब्दी से वैश्विक समुदाय को आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान किया है; इसलिए, वैदिक युग में वसुधैव कुटुम्बकम [विश्व एक परिवार है] की अनूठी अवधारणा का उद्भव और फिर वहादत-ए-अदन [धर्मों की एकता] और अकबर की दीन-ए-इलाही की अवधारणा उत्पन्न हुई। भारतीय सभ्यता सदियों से विकसित हुई है और यह उन सभी प्रमुख विचार प्रक्रियाओं के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है जिसे दुनिया ने अब तक अनुभव किया है। इसकी धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराएं हड़प्पा के दिनों से लेकर वैदिक काल तक , बौद्ध, जैन धर्म, सिख परंपराओं से लेकर सूफी परंपराओं तक फैली हुई हैं। यह सभ्यताओं , ठोस विचारों, और विविध संस्कृतियों, विभिन्न धर्मों और सैकड़ों भाषाओं के आपसी मेल का एक मोज़ेइक और मेल्टिंग पॉट रहा है।

भारतीय जनता ने सूफी विचारों को बड़े पैमाने पर स्वीकार किया क्योंकि ये परंपराएं भारत की भक्ति परंपराओं के समान है। सूफी परंपराएँ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैल गईं और इसके

दार्शनिक, अनुष्ठानिक और साहित्यिक प्रभाव ने भारतीय लोगों के मन और आत्माओं पर गहरी छाप छोड़ी और दक्षिण एशिया को एक संक्रांति संस्कृति विकसित करने में मदद की है। सूफी विचारों में मानवता के प्रति सहिष्णुता, सम्मान और सेवा और समाज के अंतिम व्यक्ति के लिए भी कल्याण की भावना शामिल है। भारत महान सूफी परंपराओं का एक आशियाना रहा है - एक ऐसी भूमि जहां दुनिया भर से सूफी आए और धर्म, रंग, जाति और क्षेत्र के विषय में कोई चिंता किए बिना शांति और मानवता का संदेश फैलाया और भाषा के अवरोधों को पार किया। कुछ सूफी परंपराओं में मानवता के प्रति प्रेम व्यक्त करने के लिए संगीत और गायन को एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

दिल्ली में आयोजित सूफी सम्मेलन वैश्विक समुदाय के हित के लिए भारत की ओर से किया गया एक आध्यात्मिक हस्तक्षेप है। इसने अध्यात्मिक संदेशों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ दुबारा जोड़ने का प्रयास किया, जिसके लिए भारतीय सूफी प्रसिद्ध हैं । सम्मेलन में हर वर्ग के लोगों ने भाग लिया, पड़ोसी पाकिस्तान और पश्चिम एशियाई देशों समेत दस से भी अधिक देशों के सूफियों से लेकर शिक्षाविदों , धर्मशास्त्रियों, नीति निर्धारकों, अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के विशेषज्ञों और इस्लामिक विद्वानों ने भाग लिया (संलग्नक देखें)।

इस सम्मेलन में शैक्षिक सत्र शामिल थे जिसमें लगभग 200 शिक्षाविदों और विद्वानों ने अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए और इस विचार को विकसित करने के लिए बहस में योगदान दिया कि कैसे इस्लामी शिक्षाएं धार्मिक चरमपंथ और धर्म के नाम पर फैलती आतंकवाद को रोक सकती हैं। यह देखा गया कि 21 वीं सदी में, भौतिकवाद और अतिवाद ने 'युवाओं के मन को बंदी' बना लिया है और इस चुनौती को पार करने में मदद के लिए सूफियों को आम जनता तक पहुंचना चाहिए।[7] अलग-अलग दृष्टिकोण से अपने विचार व्यक्त करते हुए, कुछ वक्ताओं ने सरकारों, इस्लामी समूह, नीति निर्धारक की भूमिका की आलोचना की और इस्लामी ज्ञान के क्षेत्र में उचित अनुसंधान की कमी को कुछ समूहों द्वारा अतिवाद, बहिष्कार और हिंसा के कृत्यों को सही साबित करने के लिए इस्लाम का उपयोग करने का मुख्य कारण बताया। सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्ताव ने स्पष्ट रूप से इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया (आईएसआईएस) समूह और इसकी हिंसा और अतिवाद की विचारधारा को खारिज किया। इसने आईएसआईएस और तालिबान को इस्लाम विरोधी करार दिया।[8]

संभवतः, विश्व स्तर पर सबसे अच्छा भाषण भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्रमोदी द्वारा दिया गया था, जिन्होंने न केवल उपस्थित दर्शकों, बल्कि पूरे वैश्विक समुदाय को संबोधित किया और बड़े ही ध्यान से उन मुद्दों को चुना जो वे इस सम्मेलन के माध्यम से सबके सामने लाना चाहते थे, जिसमें भारत की सॉफ्ट पॉवर और आध्यात्मिकता की गौरवशाली परंपराएं शामिल थीं। उन्होंने कहा, "दिल्ली के दिल में हर धर्म के लिए स्थान है, उस धर्म लिए है जिनके अल्पसंख्यक अनुयायी हैं और उस धर्म के लिए भी जिसमें करोड़ों लोग यकीन रखते हैं।" उन्होंने सूफियों को हिंसा और आतंकवाद

के अंधियारे समय में आशा और नूर (प्रकाश) बताया और सूफी परंपरा और इस्लामी सभ्यता के प्रति गभीर सम्मान दिखाते हुए कहा , “आप इस्लामी सभ्यता की समृद्ध विविधता को दर्शाते हैं जो एक महान धर्म के ठोस आधार पर खड़ा है।” उन्होंने यह भी कहा कि जब हम अल्लाह का निन्यानबे नाम याद किया जाता है , तो उनमें से कोई भी नाम हिंसा का प्रतीक नहीं होता है। उन्होंने कहा कि इस्लाम के आदर्शों ने हमेशा आतंकवाद और चरमपंथ की ताकतों को खारिज किया है। वो रहमान और रहीम दोनों हैं, अर्थात सबसे अधिक उदार और दयालु हैं। उन्होंने अजमेर के ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का उद्धरण देते हुए कहा, “ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शब्दों में कहूं तो, सभी तरह की पूजाओं में से, जो पूजा सर्वशक्तिमान ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय है, वो दीन-दुखियों को राहत प्रदान करना है।”

हिंदू और इस्लाम धर्म के अलावा, देश में अन्य धर्मों की मौजूदगी जैसे कि पारसी धर्म, ईसाई धर्म, सिख धर्म और बौद्ध धर्म आदि दुनिया के साथ जुड़ने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी प्रदान करते हैं। भारत सरकार ने मार्च 2016 में महीने भर चलने वाली सांस्कृतिक प्रदर्शनी 'द एवरलास्टिंग फ्लेम इंटरनेशनल प्रोग्राम' का उद्घाटन किया, जिसमें पारसी समुदाय के बहुसांस्कृतिक लोकाचार का जश्न मनाया गया।[9] इससे पहले, 10-12 सितंबर 2015 को, भारत के विदेश मंत्रालय ने भोपाल , मध्य प्रदेश में 10 वां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया था। हाल ही में , दिल्ली ने विश्व संस्कृति महोत्सव 2016 की मेजबानी की। इन सभी घटनाक्रमों से भारत के समावे शी संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए सरकारी प्राधिकरणों और नागरिक समाज की ओर से एक ठोस प्रयास का संकेत मिलता है और सामाजिक और आध्यात्मिक संकटों पर काबू पाने में मदद करने के लिए हमें विश्व के साथ जोड़ता है।

विश्व सूफी सम्मेलन द्वारा की गई सिफारिशों और प्रस्तावों में स्कूलों और मदरसों में सूफी साहित्य और प्रथाओं को शामिल करना शामिल है। उन्होंने सूफी साहित्य, सूफी संस्कृति और संगीत को बढ़ावा देने के लिए नई दिल्ली में सूफी केंद्र और सभी राजधानी शहरों में क्षेत्रीय सूफी केंद्र स्थापित करने की सिफारिश की। विभिन्न विश्वविद्यालय में सूफी अध्ययन चेयर्स और एक सूफी विश्वविद्यालय स्थापित करने की भी सिफारिश की गई थी। चूँकि अधिकांश सूफी साहित्य फारसी और उर्दू भाषा में है, इसलिए उन्होंने यह भी सलाह दी कि इन भाषाओं को बढ़ावा दिया जाए।

हालांकि, विश्व सूफी सम्मेलन सहित इस तरह के अन्य सम्मेलनों को आधिकारिक तौर पर मान्यता और प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि ये विश्व में चरमपंथ, आतंकवाद और हिंसा के खिलाफ भारत के बौद्धिक योगदान को दर्शाता है, पर फिर भी नीतिगत स्तर पर, नीति निर्माण में उनके योगदान को संभवतः बढ़ाने की आवश्य कता है। आतंकवाद की वजह से जब दुनिया गंभीर संकटों का सामना कर रही है, तब भारत के आध्यात्मिक नेतृत्व का दावा करने के लिए , केवल कुछ सम्मेलन आयोजित करने मात्र से इस चुनौती के खिलाफ एक मजबूत नीति प्रतिक्रिया का निर्माण

नहीं किया जा सकता । अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की सफलता से पता चला है कि चरमपंथी विचारधाराओं का मुकाबला करने के लिए इसी प्रकार की पद्धतियों का इस्तेमाल करके वैश्विक स्तर पर एक मजबूत सूफी रिवायत बनाया जा सकता है। तुर्की सूफी जलालुद्दीन रूमी को दुनिया में किसी भी अन्य सूफी की तुलना में अधिक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है, हालांकि पूरी दुनिया में से भारत में सबसे अधिक संख्या में सूफी मौजूद है , जिन्हें दुनिया में प्रमुख सूफी व्यवस्थाओं का मुर्शीद (आध्यात्मिक गाइड) माना जाता है।

भारत अपने आध्यात्मिक नेतृत्व को समावेशी तरीके से पे श करता रहा है। हालाँकि और प्रयासों की आवश्यकता है। इस बात का आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि भारतीय समाज के सभी वर्गों में उनकी लोकप्रियता के बावजूद, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती उपमहाद्वीप से आगे वैश्विक समुदाय का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाए।

कुछ मुस्लिम समूहों और बु द्धिजीवियों और कुछ सूफी संप्रदायों द्वारा कुछ कारणों से विश्व सूफी सम्मेलन की आलोचना की गई थी। ये सम्मेलन भारतीय उपमहाद्वीप के मुसलमानों के लिए ध्यान का केंद्र बन गया क्योंकि यह इस तरह की अन्य सम्मेलनों के साथ-साथ आयोजित किया गया था। जमीयत अहले हदीस ने 12-13 मार्च 2016 को नई दिल्ली में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय 33 वें अखिल भारतीय अहले- हदीस सम्मेलन का आयोजन किया , जिसे पैगंबर के पाक मस्जिद, मदीना, सऊदी अरब के इमाम ने संबोधित किया।[10] जमीअत उलेमा-ए-हिन्द ने मार्च 2016 को नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय एकता सम्मेलन' और 28 मार्च 2016 को गोधरा, गुजरात में एक अन्य सम्मेलन "हुसूल-ए-इंसाफ व इस्लाह-ए-मुआशिरा सम्मेलन" आयोजित किया। दोनों सम्मेलनों में अतिवाद और आतंकवाद के मुद्दे पर चर्चा हुई। जमात- ए-इस्लामी हिंद, नदवतुल उलमा जैसे संगठनों और अन्य राजनीतिक समूह तटस्थ बने रहे और उन्होंने इस तरह के आयोजनों का ना तो समर्थन और ना ही विरोध।

हालाँकि, यह देखा जा सकता है कि ये समानांतर और प्रतिस्पर्धी सम्मेलन भारत में आतंकवाद के मामले पर उभरते दृष्टिकोण का संकेत है , और इसे "सऊदी-समर्थक" बनाम "सऊदी-विरोधी" और "ईरान-समर्थक" बनाम "ईरान-विरोधी" रिवायत के अंतर्गत सीमित करता है । सूफी सम्मेलन में दिए गए कुछ भाषणों में सऊदी अरब और इसकी वहाबी[11] विचारधारा की समालोचना की गई, जबकि अहले हदीस के सम्मेलन में सऊदी अरब के प्रति एक गैर- राजनीतिक दृष्टिकोण बनाए रखा गया, और अरब देशों के प्रति अपनी नीतियों के लिए ईरान की परोक्ष रूप से आलोचना की गई।

सूफी सम्मेलन के तुरंत बाद , मक्का के पाक मस्जिद के इमाम , शेख सालेह ने भारत का दौरा किया और अपने भाषणों में दोहराया , "सऊदी अरब हमेशा आतंकवाद के खिलाफ खड़ा रहा है" और कई बार , इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है। उन्होंने कहा , "इस देश ने पूरी दुनिया में शांति बनाए रखने के लिए कई प्रयास किए हैं और आगे भी अपने प्रयास जारी रखेगा।"[12] संभवतः, विश्व

सूफी सम्मेलन के कारण सऊदी अरब के छवि को हुए नुकसान की भरपाई के लिए ऐसा कहा गया था।

शायद, इस सम्मेलन में सबसे दिलचस्प भाषण सीरियाई मु फ़्ती बदरुद्दीन हसन का भाषण था, जिन्होंने कई भाषण देने के बावजूद , सीधे-सीधे सऊदी अरब और इसकी वहाबी विचारधारा पर बोलने से परहेज किया, हालांकि वे सऊदी शासन के कट्टर प्रतिद्वंद्वी सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल असद के साथ करीब से जुड़े हैं।

भारतीय नीति निर्माताओं के लिए चिंता का विषय यह होना चाहिए कि आतंकवाद पर किया जाने वाला विचार-विमर्श भारतीय मुसलमानों के बीच विवादास्पद और विभाजनकारी रेखा नहीं बनानी चाहिए। यह सर्वविदित है कि ईरान और सऊदी अरब दोनों का भारत के मुस्लिम समुदायों के साथ ऐतिहासिक जुड़ाव रहा है, लेकिन ये जुड़ाव बड़े पैमाने पर गैर- राजनीतिक और गैर-विभाजनकारी रहे हैं। अगर सीरिया और इराक में उनकी विरोधी नीतियों के लिए इन जुड़ावों का इस्तेमाल किया गया, तो इस बात का असल खतरा है कि विश्व सूफी सम्मेलन पर इस विचार-विमर्शों में पक्षपात करने का आरोप लगाया जा सकता है, जो कि सम्मेलन ने नहीं किया है।

विश्व सूफी सम्मेलन ने आतंकवाद और अतिवाद पर विविध विचारों को व्यक्त करने और चुनौतियों का समाधान करने के लिए अधिक से अधिक आम सहमति बनाने के लिए एक समावेशी मंच प्रदान किया है।

***

** डॉ अतहर ज़फर और डॉ ओमैर अनास इंडियन काउंसिल ऑफ़ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली के रिसर्च फेलो हैं।*

इसमें व्यक्त किए गए विचार शोधकर्ता के हैं और परिषद के नहीं हैं।

अंत टिप्पण:

[1] "In Display of Indian Soft Power, Sufism to be Showcased as Counter to Radical Islam", 14 March 2016, http://thewire.in/2016/03/14/showcasing-sufism-as-a-counter-narrative-to-radical-islam-24744/

[2] "PM Modi may attend the first World Sufi Forum in Delhi", *Economic Times* 1 March 2016, http://economictimes.indiatimes.com/articleshow/51208012.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst (Accessed 2 May 2016)

[3] BBC, " Anders Breivik, Norway murderer, wins human rights case," 20 April 2016, http://www.bbc.com/news/world-europe-36094575, (Accessed 20 April 2016)

[4] Jane Ciabattari, "Why Rumi is the best-selling poet in the US?" 21 October 2014, http://www.bbc.com/culture/story/20140414-americas-best-selling-poet (Accessed 6 April 2016)

[5] Ibid.

[6] "City List – 22 Sufis, around Town," The Delhi Walla, 4 October 2013, http://www.thedelhiwalla.com/2013/10/04/city-list-22-sufis-around-town/ (Accessed 6 April 2016)

[7] Priyanka Mogul, "World Sufi Forum 2016: What you need to know about Muslim event inaugurated by Narendra Modi," All India Ulama and Mashaikh Board, 1 March 2016, http://www.aiumb.org/tag/aiumb/page/3/ (Accessed 20 April 2016).
[8] Ambika Pandit, "IS, Taliban anti-Islam, says Sufi forum; tells government Muslims scared," *Times of India*, 21 March 2016, http://timesofindia.indiatimes.com/india/IS-Taliban-anti-Islam-says-Sufi-forum-tells-government-Muslims-scared/articleshow/51486357.cms (Accessed 12 April 2016).
[9] Press Information Bureau, Government of India "Shri Arun Jaitley opens the Everlasting Flame International Programme," 19 March 2016, http://pib.nic.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=138176 (Accessed 16 April 2016).
[10] Official Facebook Page of the conference: https://www.facebook.com/AhleHadeesConference/photos/a.818055364939177.1073741826.818054821605898/960687524009293/?type=3&theater (Accessed 2 May 2016)
[11] http://www.catchnews.com/india-news/world-sufi-forum-muslim-leaders-divided-over-pm-modi-s-presence-1458186782.html
[12] "Terrorists follow no religion: Kaaba Imam", *The Times of India,* 2 April 2016 http://timesofindia.indiatimes.com/city/patna/Terrorists-follow-no-religion-Kaaba-Imam/articleshow/51665229.cms (Accessed 4 May)

संलग्नक 12

क्रमांक	नाम	देश	पद
1.	डॉ सहीद मखदूम रहीन	अफ़गानिस्तान	भारत के लिए अफ़गानिस्तान के पूर्व राजदूत
2.	सूफी मोहम्मद मिनाजुर रहमान	बांग्लादेश	अल्लामा रूमी सोसाइटी , चित्तागोंग और सूफी मिज़ान फाउंडेशन के मुख्य संरक्षक
3.	शेख फैसल हामिद अब्दुल रज़ाक	कनाडा	कनाडा
4.	शेख उल- इस्लाम डॉ मोहम्मद ताहिर उल-कादरी	कनाडा/ पाकिस्तान	कनाडा आधारित पाकिस्तानी विद्वान एवं सक्रियतावादी
5.	उस्ताद हाजी नूरुद्दीन	चीन	अरबी सुलेख के प्रसिद्ध गुरु
6.	शाव्की इब्राहीम अब्देल-करीम अलम	मिस्र	मिस्र के 19 वें और तात्कालिक ग्रैंड मुफ्ती

7.	शेख सय्यैद हासिम अब्दुल कादर मंसूरउद्दीन अल गिलानी	इराक	बग़दाद, इराक में दरबार सैय्यदीना शेख अब्दुल कादिर अल गिलानी के सज्जाद्नशीन
8.	शेख ऑन अल-कादुमी	जॉर्डन	प्रसिद्ध सुन्नी विद्वान और उपदेशक, जॉर्डन
9.	मोहम्मद तोलेगेन मुखामे जनोव	कज़ाकिस्तान	अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय संघ "संस्कृति के माध्यम से शांति", कज़ाकिस्तान
10.	शेख अफिफुद्दीन अल-जैलानी	मलेशिया	अल-वरीसेन ट्रस्ट के संस्थापक, अध्यक्ष
11.	शेख मोहम्मद इद्रीस बूचिब्ती	मोरक्को	मोरक्को
12.	अल्लामा शाहज़ाद मुजाद्दीदी	पाकिस्तान	अध्यक्ष, दर-उल-इखलास, पाकिस्तान
13.	दीवान अहमद मसूद चिश्ती	पाकिस्तान	पाकिस्तान में बाबा फरीद गंज शकर के वंशज
14.	मौलाना हामिद सैय्यद काज़मी	पाकिस्तान	पाकिस्तान में सुन्नी समुदाय के प्रमुख नेता और धार्मिक मामलों के पूर्व संघीय मंत्री
15.	मुफ़्ती अन्सारुल कादरी	पाकिस्तान	पाकिस्तान के एक प्रसिद्ध सूफी विद्वान
16.	शाह पीर ताज हुसैन	पाकिस्तान	पाकिस्तान के एक सूफी विद्वान
17.	शेख असरफ महमूद पार्कर अल-कादरी	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका के एक

			प्रसिद्ध सूफी विद्वान
18.	शेख तुगरुल जेराही एर्फेंदी–दरवेश	तुर्की	सूफी विद्वान, तुर्की
19.	हज़रत अस- सय्यैद अश शेख मुहर्रम हुसैन कैफर-ई तैय्यर अस-सैय्यादियार-रफाई	तुर्की	महमूद-ई-हयरानी हेल्थ एंड कल्चरल फाउंडेशन (मनीसा, तुर्की)
20.	पीर मोहम्मद अलाउद्दीन सिदिक्की	ब्रिटन	मोहिउद्दीन ट्रस्ट , यूके के संस्थापक
21.	पीर मोहम्मद सकीब बिन इक़बाल शामी	ब्रिटन	यूके
22.	प्रोफ़ेसर डेविड पेक	ब्रिटन	ब्रिटेन के ब्रिंघम यंग यूनिवर्सिटी में इतिहास के प्रोफ़ेसर
23.	शेख मुहम्मद इमदाद हुसैन पीरज़ादा	ब्रिटन	संस्थापक जामिया-अल-करम, लन्दन, यूके
24.	शेख अल्लामा ग़ुलाम रब्बानी	ब्रिटन	संस्थापक, कंज़ुल हुदा, यूके
25.	डॉ ऐलन ए गॉडनास	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	निदेशक, यूजीए वर्चुअल सेंटर ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज ऑफ द इस्लामिक (वीसीआईएसआईडब्ल्यू), यूएस
26.	जोनाथन ग्रैनोफ़	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	ग्लोबल सिक्यूरिटी इंस्टिट्यूट के अध्यक्ष, वैश्विक धर्मों की

			शांति, सुरक्षा और परमाणु निरस्त्रीकरण के संसदीय राजदूत, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
27.	रिचर्ड हेल्मिन्सिंकी एडमंड	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	अमेरिका के सूफी विद्वान
28.	शेख मुहम्मद बिन याहया अल निनोवी	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	विद्वान, जॉर्जिया, अमेरिका
29.	डॉ वाल्टर एंडरसन	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	अमेरिका विदेश विभाग के दक्षिण एशिया प्रभाग , अमेरिका के पूर्व अध्यक्ष
30.	प्रोफ़ेसर कार्ल अर्नेस्ट	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय में धार्मिक अध्ययन विभाग में इस्लामी अध्ययन के प्रतिष्ठित प्रोफेसर
31.	स्टेफेन सुलेमान श्वार्ट्ज़	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	वाशिंगटन, डीसी में इस्लामिक बहुलवाद केंद्र के कार्यकारी निदेशक

12 World Sufi Forum, http://worldsufiforum.com/speakers/